वैश्विक चुनौती: कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मानव समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।

डा. हिमानी बंसल, प्रिंसिपल, सरस्वती विद्या निकेतन सेकेंडरी स्कूल बनीपार्क, जयपुर

सारांश

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक दोधारी तलवार की तरह है जो मानव जाति को आराम देह स्थिति में लाकर धीरे-धीरे विनाश की तरफ धकेल रहा है। इंसान को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नकारात्मक एवं सकारात्मक परिणामों के बीच में संतुलन बनाना सीखना पड़ेगा और यह सीखने की प्रक्रिया की गति कृत्रिम बुद्धिमत्ता से ज्यादा तेज होनी चाहिए।

यदि हम सकारात्मक परिणाम के विषय में आशावादी व्यक्ति की तरह सोचें तो यह मानव कार्यबल को धनात्मक दिशा देता है तीव्रता से काम करता है एवं मानव की तुलना में अधिक सटीक परिणाम देता है। यदि हम नकारात्मक परिणामों के बारे में सोचें तो क्या मशीन सुपर इंटेलिजेंट हो जाएगी और मानव मशीन पर से अपना नियंत्रण खो देगा यह सबसे बड़ा खतरा होगा। ए आई का मूल अविष्कार मानवता को लाभ पहुंचाने का है पर अगर यह स्वयं बुद्धिमत्ता के कारण मानव जाति को विनाश की तरफ धकेलता है तो इस दिशा में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।